राजपाल सिंह गुलिया

जन्मतिथि : 27.12.1964
जन्मस्थान : जाहिदपुर , झज्जर
पिता का नाम : श्री धुपल सिंह
माता का नाम : श्रीमती खीमा देवी
मोबाइल - 94162 72973

सुख में छाती पीटते , संकट में करताल ।
हमदर्दी का आजकल , है कुछ ऐसा हाल ।।
है कुछ ऐसा हाल , ग़ैर का सुख न सुहाए ।
कल का मरता आज , भले ही जग मर जाए ।
कह गुलिया कविराय , खुशी ये खोजें दुख में ।
लगती इनको ठेस , किसी को देखें सुख में ।।

****

बढ़ता ही अब जा रहा , जन जन में अवसाद ।
इसके कारण हो रहे , कितने घर बर्बाद ।।
कितने घर बर्बाद , चाह जीवन की छीने ।
बढ़े नकारा सोच , नहीं जो देती जीने ।
कह गुलिया कविराय , भाव कुंठा का चढ़ता ।
करता आत्मघात , रोग जब हद से बढ़ता ।।

****

मिलते हैं संसार में , भाँति भाँति के लोग ।
करें किनारा कुछ यहाँ , कुछ करते सहयोग ।।
कुछ करते सहयोग , काम ये हरदम आते ।
करें कभी ना छेद , यहाँ जिस थाली खाते।
कह गुलिया कविराय , देख जिनको दिल खिलते ।
मुझे बताओ , मीत , कहाँ अब ऐसे मिलते।।

****

करना चाहें नौकरी , मानें ना आदेश ।
जाने कैसे लोग ये , कैसा ये परिवेश ।।
कैसा ये परिवेश , करें ना तनिक कमाई ।
घर में भूखे मूष , तोड़ते हैं अँगड़ाई ।
कह गुलिया कविराय ,छोड़ दो कान कतरना ।
करो कमाई नेक , ऐश जो चाहो करना ।

****

अपने कटते दिन नहीं , दें दूजों को दान ।
कदम कदम भूलोक में , हैं ऐसे इंसान ।।
हैं ऐसे इंसान , दिखावा झूठा करते ।
खुद हैं जो बेज़ार , पीर दूजों की हरते ।
कह गुलिया कविराय ,कहाँ सच होते सपने ।
विपदा में दें साथ , वही होते हैं अपने ।।

****

भूखे की बस चाह ये , मिलें रोटियाँ दाल ।
भरे पेट की लालसा , खूब मिले धन माल ।।
खूब मिले धन माल , बने हम वैभवशाली ।
रखना हरदम याद , बात ये बड़ी निराली ।
नफरत से मत देख, खिला कर मेवे सूखे ।
निर्धन हों या सेठ , सभी आदर के भूखे ।।

****

डालें सिर ये ओखली , मूसल से संत्रास ,
नई नस्ल की सोच ये , बनी आज उपहास .
बनी आज उपहास , उन्हें अब कौन उबारे
करते जन जो काज , बिना ही सोच विचारे .
कह गुलिया कविराय , मदद का वहम न पालें ,
मंत्र पढ़े जो ग़ैर , हाथ ना बाँबी डालें.

****

अपना भारत देश ये , बने जगत सिरमौर ।
इतनी सी है कामना , चाह नहीं कुछ और ।।
चाह नहीं कुछ और , किसी पर करें चढ़ाई ।
बढ़े विश्व में प्यार , सुनो बहन और भाई ।
कह गुलिया कविराय , यही हो सबका सपना ।
बने विश्व सरदार , देश ये भारत अपना ।।

****

पानी पीकर देश का , बनना पानीदार ।
यही समय की मांग है , ये ही लोकाचार ।।
ये ही लोकाचार , बड़ा आदर को मानो ।
बहुत कीमती नीर , मोल इसका भी जानो ।
कह गुलिया कविराय , करो मत ये नादानी ।
बड़ा बड़ों का मान , फेर ना देना पानी ।।

****

हर ले सब के कष्ट जो , दूर करे संत्रास ।
जादू की ऐसी छड़ी , नहीं किसी के पास ।।
नहीं किसी के पास , सभी को खुशियाँ बाँटे ।
पुष्प बिछा दे राह , खार रस्ते से छाँटे ।
कह गुलिया कविराय , ईश का सुमिरन कर ले ।
वो ही पालनहार , विपद जो सब की हर ले ।।